प्राकृतिक वनस्पतिः

प्राकृतिक वनस्पति वनस्पति आवरण को संदर्भित करता है जो बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के भू–जलवायवी कारकों के साथ प्राकृतिक रूप से वृद्धि करता है।

भारत में विविध जलवायु और भूआकृतिविज्ञान के साथ विविध प्राकृतिक वनस्पति भी पाई जाती है। भारत विविध प्रकार की प्राकृतिक वनस्पतियों का देश है। हिमालय की ऊँचाइयाँ समशीतोष्ण वनस्पतियों, पश्चिमी घाट और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में उष्णकटिबंधीय वर्षा वनों, डेल्टा क्षेत्रों में उष्णकटिबंधीय और गरान वनों, राजस्थान के मरुस्थल और अर्ध–मरुस्थल भूभाग/इलाके में कैक्टि एवं भिन्न प्रकार की झाड़ियों और कंटीली वनस्पतियों के लिए जाने जाते हैं। जलवायु और मृदा में भिन्नता के आधार पर, भारत की वनस्पति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में परिवर्तित होती है। भारत की प्राकृतिक वनस्पति उच्चावच और जलवायु स्थितियों के साथ पूर्ण सामंजस्य दर्शाती है। सिंधु–गंगा के मैदानों और थार मरुस्थल में विदेशज प्रजातियाँ पाई जाती हैं ओर जो

तालिका 5.3: भारत में वनस्पति के प्रकार

क्रम सं.	वनस्पति के प्रमुख प्रकार	उप–प्रकार
1	आर्द्र उष्णकटिबंधीय	1) उष्णकटिबंधीय आर्द्र–सदाबहार 2) उष्णकटिबंधीय अर्ध–सदाबहार 3) उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती 4) वेलांचली एवं अनूप/कच्छ
2	शुष्क उष्णकटिबंधीय	1) उष्णकटिबंधीय शुष्क सदाबहार 2) उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती 3) उष्णकटिबंधीय कंटक/काँटेदार
3	पर्वतीय उपोष्ण–कटिबंधीय	1) उपोष्ण कटिबंधीय चौड़ी पत्तियाँ पहाड़ी 2) उपोष्ण कटिबंधीय आर्द्र पहाड़ी (चीड़) 3) उपोष्ण कटिबंधीय शुष्क सदाबहार
4	पर्वतीय शीतोष्ण	1) पर्वतीय आर्द्र शीतोष्ण 2) हिमालय आर्द्र शीतोष्ण
5	अल्पाइन	1) उप–अल्पाइन 2) आर्द्र अल्पाइन गुल्म 3) शुष्क अल्पाइन गुल्म

(स्रोतः Negi, S.S (1994). *India's Forest, Forestry and Wildlife*. Delhi, South Asia Publisher)

A. आर्द्र उष्णकटिबंधीय वनस्पति

1. उष्णकटिबंधीय आर्द्र सदाबहारः यह उन प्रदेशों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 250 सेंटीमीटर, वार्षिक तापमान 25°–27°C रहती है तथा औसत सापेक्ष आर्द्रता 77 प्रतिशत से अधिक होती है। एक विशिष्ट अल्प शुष्क मौसम इसकी मुख्य विशेषता है। इस प्रकार की वनस्पतियों की प्रमुख विशेषता यह है कि उच्च ताप और उच्च आर्द्रता के कारण, वृक्षों के पत्ते एक साथ नहीं झड़ते हैं और वास्तव में एक सदाबहार वन निर्मित करते हैं। इस वनस्पति में समोद्भिदिय सदाबहार के साथ ऊँचे और बहुत घने बहुस्तरीय वन शामिल हैं जो न तो बहुत शुष्क और न ही बहुत आर्द्र प्रकार की जलवायु के अनुकूल हैं। इन वनों के पेड़ 45 मीटर ऊँचे तथा 60 मीटर से कम ऊँचे होते हैं। यह घने वितान की विशेषता वाले होते हैं और ऊपर से पर्णसमूह की घनी वितान के साथ उष्णकटिबंधीय वर्षा वन की तरह दिखाई देते हैं। घने वितान के कारण सूर्य का प्रकाश धरातल तक नहीं पहुंचने के कारण अववृद्धि कम होती है। अववृद्धि /झाड़ झंखाड़ मुख्य रूप से फर्न, आरोही पादप, बाँस और ऑर्चिडस का होता है।

यह पश्चिमी घाट के पश्चिमी किनारे पर समुद्र तल से 500 से 1370 मीटर की ऊँचाई पर मुंबई के दक्षिण में पूर्वांचल पहाड़ियों और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के पार भी पाए जाते हैं।

उष्णकटिबंधीय आर्द्र सदाबहार वनस्पति की लकड़ी सूक्ष्मकणिक, दृढ़/कठोर और टिकाऊ होती है। इस दृढ़ लकड़ी का उच्च व्यावसायिक मूल्य है लेकिन घनी होती वृद्धि, शुद्ध स्टैंड की अनुपस्थिति और परिवहन सुविधाओं की कमी के कारण इनका

दोहन करना बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है। महत्वपूर्ण वृक्ष की प्रजातियों में महोगनी, मेसुआ, सफेद देवदार, जामुन, बेंत, धूप और बांस आदि शामिल हैं।

2. उष्णकटिबंधीय अर्ध–सदाबहार: यह उष्णकटिबंधीय आर्द्र सदाबहार और उष्णकटिबंधीय पर्णपाती के बीच माध्यमिक या संक्रमणकालीन वनस्पति आवरण है। यह आर्द्र उष्णकटिबंधीय सदाबहार प्रकार की तुलना में कम शुष्क होते हैं। यह उन प्रदेशों में पाए जाते हैं जहाँ वार्षिक वर्षा 200–250 सेंटीमीटर, औसत वार्षिक तापमान 24 डिग्री से 27 डिग्री सेल्सियस और सापेक्षिक आर्द्रता लगभग 75 प्रतिशत रहती है। यह ज्यादातर असम, पश्चिमी तट, पूर्वी हिमालय के निचले ढलान पर, उड़ीसा और अंडमान में पाए जाते हैं।

अर्ध–सदाबहार वनस्पति कम घनी होती है। यह झुंड एवं बस्तियों/समूहों में अधिक एकत्रित पाए जाते हैं और इनमें कई प्रजातियों की विशेषता मिलती है। पेड़ों में आमतौर पर प्रचुर मात्रा में एपिफाइट्स के साथ मजबूत तना होती है। इनमें खुरदरी और मोटी छाल, भारी आरोही पादप और कम बांस शामिल हैं।

पश्चिमी घाट पर पाए जाने वाले लॉरेल, रोजवुड, मेसुआ, कांटेदार बाँस, केंजू, कुसुम, मुंडानी, सेमुल, होपिया, कदम एवं इरुल आदि, महत्वपूर्ण प्रजातियाँ हैं। जबकि हिमालय क्षेत्र में, सफेद देवदार, भारतीय चेस्टनट या शाहबलूत और चंपा आदि पेड़ पाए जाते हैं।

3. उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती: इस प्रकार की वनस्पति में पेड़ों और घासों का मिश्रण मिलता है और यह उस क्षेत्र में पाए जाते हैं जहां वार्षिक वर्षा 100 से 200 सेंटीमीटर, औसत वार्षिक तापमान लगभग 27 अंश/डिग्री सेल्सियस रहता है। औसत सापेक्ष आर्द्रता 60 से 75 प्रतिशत के बीच रहती है।

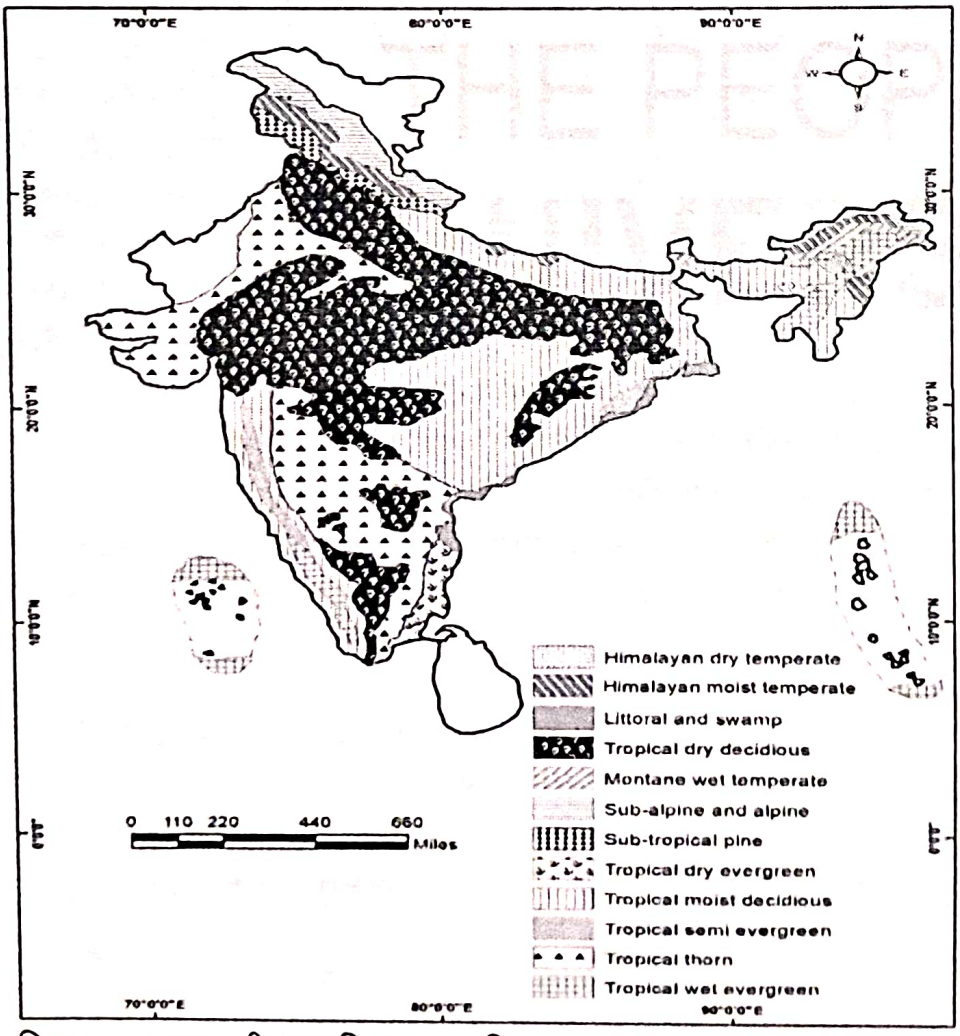

चित्र 5.1: भारत की प्राकृतिक वनस्पति।

उष्णकटिबंधीय आर्द्र पर्णपाती वनस्पति अनियमित वृक्ष की कक्षा का निरूपण करते हैं जिसकी ऊँचाई लगभग 25 से 60 मीटर होती है। इनमें बहुत अधिक मज़बूत पेड़ होते हैं और इनमें काफी झाड़–झंखाड़ यानी अववृद्धि होती है। यह सदाबहार प्रकार की वनस्पतियों की तुलना में बहुत बड़े क्षेत्र को आवृत करते हैं, लेकिन कृषि हेतु इसके बड़े क्षेत्र/भूभाग को साफ कर दिया गया है। यह मुख्य रूप से पश्चिमी घाट के समानांतर सदाबहार वन आवरण के आसपास क्षेत्र की एक पट्टी में पाए जाते हैं। यह तराई और भाबर क्षेत्र सहित शिवालिक श्रेणी के किनारे भी पाए जाते हैं। यह पूर्वी मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ की पहाड़ियों, छोटा नागपुर पठार, उड़ीसा के अधिकांश हिस्सों, पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में भी मौजूद हैं। यह मूल्यवान लकड़ी और अन्य उत्पाद जैसेकि सागौन, साल, लॉरेल, लेंडी, सेमुल, इरुल, रोजवुड, आंवला, कुसुम, जामुन और बांस आदि सामग्री प्रदान करते हैं।

4. वेलांचली और अनूप वनः इस प्रकार की वनस्पति अलवणजल और नुनखरा/खारा जल दोनों में पनपती है जो समुद्री जल और अलवणजल का मिश्रण है। लवणता 0.5 से 35 ग्राम प्रति किलोग्राम के बीच होती है। यह मुख्य रूप से डेल्टा के मुहानों ज्वारनदमुख और खाड़ियों के आसपास पाए जाते हैं जो ज्वार से प्रभावित होते हैं। यह मुख्य रूप से अंडमान और निकोबार के भीतर गंगा सहित महानदी, गोदावरी, कृष्णा एवं कावेरी के डेल्टा में भी पाए जाते हैं।

इनमें लगभग 30 मीटर ऊँचाई के गरान वृक्ष मिलते हैं जिसका उपयोग ईंधन के लिए किया जाता है। एपिफाइट्स पूरे वन में प्रमुख प्रजाति है, उच्च भूमि/धरातल में स्क्रूपाइन्स (Screw Pines), जबकि निप्पा फ्रिटिकन्स (Nippa Friticans) कच्छ और संकड़ी खाड़ियों/निवेशिका में मिलती है। यहाँ सुंदरवन डेल्टा में सुंदरी (Heriteira Minor) नामक वृक्ष भी मिलते हैं जिसके आवरण से यह आच्छादित है।